इकाई 2 नेटवर्किंग*

*डॉ. मालाथी अदुसुमाली
एवं डॉ. नमिता जैनर

रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 नेटवर्क और नेटवर्किंग की परिभाषा

2.3 समाज कार्य में नेटवर्किंग का महत्त्व

2.4 प्रभावी नेटवर्किंग के आवश्यक तत्त्व

2.5 नेटवर्क के विभिन्न प्रकार

2.6 नेटवर्किंग के साधन और कार्यनीतियाँ

2.7 सारांश

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगेः

* डॉ. मालाथी अदुसुमाली एवं डॉ. नमिता जैनर, समाज कार्य विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय , दिल्ली।

- नेटवर्क और नेटवर्किंग की अवधारणा को समझना;
- समाज कार्य में नेटवर्किंग के महत्व को समझना;
- नेटवर्किंग के प्रकारों, उपकरणों और रणनीतियों को समझना; और
- प्रभावी नेटवर्किंग के आवश्यक तत्त्वों को समझना।

2.1 प्रस्तावना

समाज कार्य अभ्यास सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक न्याय, सामाजिक समबद्धता और जनता के सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करने के लिए है (आई.एफ.एस.डब्ल्यू. 2014)। व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ता गौण और उत्पीड़ित समूहों के साथ अपनी प्रक्रिया में विभिन्न तरीकों और तकनीकों का प्रयोग करते हैं। प्रक्रिया/अभ्यास का सबसे अधिक प्रसिद्ध चयन केस कार्य/वाद–प्रतिवेदन कार्य, समूह कार्य और सामुदायिक कार्य है। वैश्वीकरण के इस परिवर्तनीय सामाजिक वातावरण में केवल एक अकेले व्यक्ति के लिए समाज कार्य अभ्यास चुनौतीपूर्ण होता चला गया अर्थात् समाज कार्य अभ्यास केवल एक अकेले व्यक्ति के बस की बात नहीं रही।

समाज कार्यकर्त्ताओं को अनिवार्य रूप से प्रभावशाली प्रक्रिया के लिए नेटवर्कों का विकास करने और सहायक प्रणालियों की आवश्यकता है। समकालीन समय में नेटवर्किंग को समाज कार्य अभ्यास का महत्त्वपूर्ण तरीका माना गया है, क्योंकि इसकी प्रभावशीलता के कारण संसाधनों के दोहन में, ज्ञान प्राप्त करने में, नीतियों को प्रभावित सामाजिक न्याय और अधिकारों के लिए वकालत में सहायता मिलती है।

2.2 नेटवर्क और नेटवर्किंग की परिभाषा

अभिरुचियों को साझा करना सभी नेटवर्किंग प्रयत्नों का आधार है और यह व्यक्तियों के बीच सूचना, योजनाओं और संसाधनों का आदान–प्रदान करने के विषय में है। सहायक नेटवर्कों को बनाना नेटवर्किंग कार्य की आधारशिला है। क्रिस्ट–अशमान और हुल (2006) नेटवर्क को इस प्रकार प्रभावित करते हैं, 'बहुत

से व्यक्ति और संस्थाएं जिनका एक लक्ष्य को पूरा करने के लिए आपस में सहसंबंध है वे प्रत्येक इसे लाभप्रद अनुभव करते हैं'। वे एक विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, अनौपचारिक सम्बन्धों की तदर्थ व्यवस्था भी हो सकती है।

गिलक्रिस्ट (2004) सुझाव देते हैं कि नेटवर्क में, 'अस्तित्व और संयोजन के स्थायित्व का निर्धारण व्यक्तिगत रुचियों, परिस्थितियों या कभी–कभी विशुद्ध समान घटनाओं द्वारा होता है। सदस्यों के बीच सहकारिता इकरारनामें या बल प्रयोग के बजाय विनिमय और दृढ़ विश्वास पर निर्भर करती हैः नेटवर्क का सबसे महत्त्वपूर्ण और लाभदायक पहलू इसके संबंधों का प्रतिरूप है, जो प्रायः आधारभूत मूल्य, सांझी रुचि या केवल अतिव्यापी जीवन के भूगोल से प्रतिबिम्बित होती है'।

नेटवर्क के सहजीवी संबंधों इस ज्ञान पर आधारित समझ के साथ, फोलगरेटर (2004) नेटवर्किंग को इस प्रकार परिभाषित करता है, 'एक या अनेक समाज कार्यकर्त्ताओं के द्वारा जानबूझकर किए गए कार्य जो जनता के नेटवर्क के साथ संयुक्त कार्रवाई, कार्यों में संबंधों का रूप ले लेते हैं, जैसे–अन्य पूर्व विद्यमान या अन्तर्निहित संबंधों के साथ'। इस कार्रवाई का उद्देश्य न्याय चाहने वालों को समर्थन देना और विशेषज्ञ और नेटवर्क दोनों की कार्रवाई के लिए गुणवत्ता और क्षमता में सुधार करना है।

इस प्रकार, नेटवर्किंग ने समाज कार्य अभ्यास में निम्नलिखित महत्त्व पर जोर दिया हैः

1) इसमें अन्य व्यवसायियों के साथ संबंधों का बनाना सम्मिलित है, जो इन पारस्परिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक साथ कार्य करने के लिए अभिरुचियों, सुअवसरों और लक्ष्यों को सांझा करते हैं।

2) यह संसाधनों को जुटाने के लिए समुदायों, संगठनों और समाजों के बीच तथा भीतर लाभदायक संयोजनों, संबंधों को उत्पन्न करने के विषय में है

और व्यवसायी समाज कार्यकर्त्ताओं के उद्देश्यों को प्राप्त करने के बारे में है।

3) यह सांझा लक्ष्यों की उपलब्धि के लिए पारस्परिक समर्थन, सहायता और नियुक्तियों के लिए नेटवर्क में सभी भागीदारों के साथ दीर्घकालिक सहजीवी संबंध बनाने की मांग करता है।

2.3 समाज कार्य में नेटवर्किंग का महत्त्व

एक प्रभावी समाज कार्य अभ्यास के लिए समाज कार्यकर्त्ताओं को अन्य व्यक्ति और संगठनों के साथ मिलकर काम करने और सहयोग देने की आवश्यकता है। नेटवर्क का मूल्य गरीबी के प्रति व्यक्तिगत और सामूहिक प्रतिक्रिया को गतिशील बनाने के लिए इसकी क्षमता द्वारा आंका जाता है। नेटवर्किंग व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तरों पर सशक्तिकरण की योजना/नीति है। समाज कार्यकर्त्ताओं को नेटवर्क और नेटवर्किंग की अनिवार्यता को आश्रितों और अपनी प्रभावशीलता दोनों के लिए सहायकों और बदलाव की इकाई के रूप में भी आवश्यक समझना चाहिए। समाज कार्य अभ्यास की प्रणाली के रूप में नेटवर्किंग के लाभ निम्नलिखित हैं:

1) **सामाजिक पूंजी:** नेटवर्क थेरेपी/निदान और नेटवर्किंग में सामाजिक कार्यों के पुनः स्थापन और समस्या को सुलझाने के लिए संपत्तियों के रूप में रिश्तों का उपयोग किया जाता है। लोगों के बीच रिश्तें दिन–प्रतिदिन समाज कार्य करने के लिए सामाजिक पूंजी का हिस्सा बनाते हैं। मानवीय पूंजी की तरह, सामाजिक पूंजी एक संपत्ति है जो व्यक्तियों को सामाजिक सुरक्षा, भावात्मक सहारा प्रदान करते हैं और उन्हें सुरक्षित महसूस कराते हैं। उदाहरण के लिए, एक दम्पत्ति के वैवाहिक संबंधों में विवाद की स्थिति में, परिवार के अन्य सदस्य और रिश्तेदार विवाद में दम्पत्ति की सहायता करते हैं। इस प्रकार के नेटवर्क व्यक्तियों को व्यक्तिगत कठिनाईयों से बचने

के लिए अपनी योग्यता के प्रति और अधिक आत्मविश्वास का अनुभव कराने में सहायता करते हैं और तनाव को कम करने में सहायता करते हैं। नेटवर्किंग औपचारिक और अनौपचारिक रूप से देखभाल करने वालों को एक साथ लाने में सहायता करती है। प्रभावपूर्ण समस्याओं को हल करने और तनाव को कम करने के लिए सहायक व्यवस्थाएं होती हैं। सहायक समूह उन समूहों के अधीन आता है, जो भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करने का कार्य कर सकते हैं, यह जनता के लिए सामाजिक पूंजी का अनिवार्य भाग बन जाता है।

2) **व्यवसाय के भीतर और बाहर संसाधनों की विभिन्नता के लिए सुविधाएं/खुले दरवाजेः** सर्वप्रथम मुख्यतः नेटवर्क संसाधनों यथा औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों को बढ़ाता है। नेटवर्किंग इस धारणा पर आधारित है कि जो लोग अपने हितों में वृद्धि करने की अधिक क्षमता/योग्यता रखते हैं वे अपने संसाधनों को इकट्ठा करते हैं। यह बढ़े हुए संप्रेषण के लिए संसाधनों को बांटने और सुअवसर प्रदान करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है जो रचनात्मक सोच और नए समाधानों का नेतृत्व कर सकता है। उदाहरणार्थ, यदि कोई संगठन महिलाओं पर बड़े पैमाने पर एसिड हमलों से संबधित नए कानून के लिए आग्रह करना चाहता है तो नए शोध करने के बजाय, यह पहले ही से एसिड हमले के शिकार लोगों के साथ कार्य कर रहे एक संगठन द्वारा किए गए अध्ययन का उपयोग कर सकते हैं।

3) **समर्थन को विस्तारित और एकता को प्रोत्साहित करनाः** नेटवर्किंग के द्वारा गठित संबंध अनुसंधान और सामाजिक अभियान पर आधारित जानकारी और नए संसाधनों को उत्पन्न करने और उनके प्रयासों के लिए समर्थन में विस्तार करने में लाभदायक हो सकते हैं। नेटवर्किंग प्रयासों के दोहराव को भी रोकता है और एक मुद्दे के लिए सामूहिक और ठोस प्रयासों को प्रोत्साहित करता है। यह स्थानीय और वैश्विक स्तरों को एकजुट करने में

सहायता करता है। यह विश्व के विभिन्न हिस्सों में लोगों के बीच बातचीत की सुविधाएं प्रदान करता है और उन्हें अपनी भिन्नताओं और अपनी समानताओं को पहचानने की सक्षमता प्रदान करता है। यह संगठनों और व्यक्तियों के लिए एकात्मकता से एक साथ लाने का साधन भी है और क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक न्याय उद्देश्यों के लिए समूहों पर दबाव डालने का कार्य करता है। समाज कार्य के लक्ष्यों के लिए संयुक्त प्रयास, वकालत का अनिवार्य भाग है क्योंकि गैर सरकारी संगठनों की गतिविधियों को बढ़ाने के लिए और संघटन में वृद्धि करने के लिए सहयोग अनिवार्य है। यहाँ तक कि समाज कार्यकर्त्ता स्वयं व्यैक्तिक तनाव को सांझा करने के लिए और मार्गदर्शन में लाभ के लिए साथी खोजते हैं। हाल ही में, समाज कार्यकर्त्ताओं के अंतर्राष्ट्रीय महासंघ ने भारत को एक सदस्य का दर्जा दिया है, जो एक लंबे समय से लंबित मुद्दा था कि एक देश से केवल एक संगठन को सदस्य का दर्जा दिया जाएगा। 2015 में छः संगठन, जिनके नाम हैं– व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं की राष्ट्रीय संस्था, स्थापना 2014, व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं की कर्नाटक संस्था, स्थापना 1977 में, व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं की केरल संस्था, स्थापना 2013 में, व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ता संस्था, स्थापना 2004 में, और प्रशिक्षित समाज कार्यकर्त्ताओं की मुम्बई संस्था, स्थापना 1989 में, को एक साथ मिलाकर एक संस्था बनायी गयी– व्यवसायिक समाज कार्य संस्था का , भारतीय नेटवर्क (आई.एन.पी.एस.डब्ल्यू.ए. जिससे भारत आई. एफ.एस.डब्ल्यू. के सदस्य का दर्जा प्राप्त कर सका।

4) **समाज कार्य अभ्यास के प्रयासों में सहायता:** नेटवर्किंग सामाजिक प्रणाली द्वारा कार्रवाई की गति बढ़ाने में सहायता करती है। यह संगठित तथा गतिशील होने में सहायता करती है, सिविल सोसाइटी समूहों को सशक्त बनाती है, और नीति–निर्माण की प्रक्रियाओं में, निर्धन तथा शक्तिहीन तबके को आवाज उठाने योग्य बनाती है। उदाहरण के लिए, पट–कथा संस्था

दिल्ली में यौन कार्यकर्त्ताओं के बच्चों के साथ कार्य कर रही है। इस संबंध में महत्त्वपूर्ण रणनीतियों में से एक, बच्चों को शिक्षित करना है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, अपनी क्षमताओं के निर्माण के स्थान पर, शिक्षा के क्षेत्र में पहले से कार्यरत अन्य संगठनों जैसे अंकुर और प्रथम के साथ सहयोग/समन्वय करना अधिक लाभप्रद होगा जिससे कि इन बच्चों के जीवन में परिवर्तन लाया जा सके।

5) **चुनौतियों का सामना करने में सहायता:** नेटवर्क का एक अन्य मौलिक लाभ यह है कि वे संगठनों को उनके औपचारिक संरचना को विस्तारित किए बिना, बढ़ती हुई चुनौतियों का सामना करने की अनुमति देते हैं। अन्य संगठनों के साथ नेटवर्क होने के कारण व्यक्तिगत कमजोरी को दूर किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, झोंपड़ी/झुग्गीदार निवासियों के अंतर्राष्ट्रीय सड़क मार्ग (सड़क विक्रेताओं का गठजोड़) उनके लाभ के लिए समूहों की अभिरुचियों को प्रोत्साहित करते हैं।

6) **मानव अधिकारों की निगरानी:** समाज कार्य अभ्यास के तहत् नेटवर्किंग को मानव अधिकारों की निगरानी को एक महत्त्वपूर्ण हिस्से के रूप में देखना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह सरकारी और गैर–सरकारी कलाकारों के परामर्श और जवाबदेही के साथ सहायता करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मानव अधिकार भागीदारों और स्थानीय अभिनेताओं के बीच जानकारी और सहयोग के सक्रिय रूप से सांझीकरण द्वारा होता है, जो मानवाधिकार के उल्लंघन की निगरानी की जा सकती है। समकालीन समय में सिकुड़ते कल्याणकारी राज्य के कारण यह भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय दलित एकता, नेटवर्क के माध्यम से ऐसे मानव अधिकारों की निगरानी का एक उदाहरण है।

7) **अनुसंधान तथा शिक्षा:** नेटवर्किंग अनुसंधान, शिक्षा तथा छात्रवृति के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। छात्रों और संस्थाओं के बीच में सहकारिता

और संपर्क, उन लोगों को, जो स्नातकोतर और व्यवसायिक समुदायों में होते हैं, उन्हें विकास के विषय में मौजूदा ज्ञान कार्य सांझा करने की अनुमति देते हैं। उदाहरण के लिए, क्षेत्र में विकासात्मक व्यवसायिक कार्य अभ्यास में व्यवसाय की समकालीन वास्तविकताओं के विषय में शिक्षा देने के लिए शिक्षात्मक संस्थाओं के लिए महत्त्वपूर्ण संसाधन हैं। समान रूप से, शिक्षात्मक संस्थाएं कार्य और अभ्यास के लिए संगठनों के लिए प्रशिक्षित व्यवसायिक संघ प्रदान करते हैं। संस्थाओं द्वारा किए अनुसंधान समाज इसके महत्त्व तथा अनुसंधान केन्द्र के साथ समकालीन चुनौतियों को समझने के एक प्रति, संगठनों के लिए बहुत ही लाभदायक हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, बीऑण्ड कोपेनहगन क्लेक्टिव, संगठनों का सहमिलन है और नेटवर्क पर्यावरणीय और जलवायु न्याय और प्रोत्साहित विकास पर कार्य करता है।

2.4 प्रभावी नेटवर्किंग के आवश्यक तत्त्व

नेटवर्किंग बहुत ही योजित और गहन प्रक्रिया है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि प्रभावी नेटवर्किंग के लिए नेटवर्किंग के निम्नलिखित घटक उपयोग में लाए जाएं:

1) **आंकड़ों को आधार बनाना:** सभी सहयोगियों के लिए संसाधनों और सूचना के आंकड़ों को आधार बनाने की रचना अनिवार्य है और नेटवर्क में यह महत्त्वपूर्ण है। इसके बिना सूचना देने और सम्प्रेषण में अंतर/दूरी आ जाएगी जो अप्रभावी नेटवर्किंग का नेतृत्व करेगी/कारण बनेगा।

2) **कायम रहने वाले (संपोषणीय) संबंधों का निर्माण:** यह महत्त्वपूर्ण है कि नेटवर्किंग संबंध समान अभिरुचियों और आपसी लक्ष्यों द्वारा, सहजीवी और पथ प्रदर्शित होते हैं क्योंकि केवल इन्ही आधारों पर संप्रेषणीय नेटवर्क को सुरक्षित/सुनिश्चित रखा जा सकता है। पारस्परिक लक्ष्य नेटवर्क में सभी सहभागियों के पारस्परिक विकास को प्रोत्साहन देते हैं। आपसी परस्पर

निर्भरता सुनिश्चित करती हैं कि नेटवर्क में सहभागी एक दूसरे के साथ लम्बे समय तक सहकारिता रखने योग्य होते हैं।

3) **संप्रेषणः** सूचना सहभाजन प्रभावी नेटवर्किंग की कुंजी है। यदि नेटवर्किंग में सहभागी निरंतर समान रुचि की सूचना को बांटने का कार्य नहीं करता तो वह नेटवर्किंग सहभागियों के बीच अविश्वास का कारण बनेगा। सूचना के सुचारु प्रवाह के बिना भी नेटवर्क में सहभागी संसाधनों का प्रभावपूर्ण ढंग से विभाग करने के योग्य नहीं होंगे। अप्रभावी संप्रेषण नेटवर्किंग के लिए सबसे बड़ी रुकावट है क्योंकि यह प्रायोजन नेटवर्क का गठन करने में विफल हो जाता है।

4) **गोपनीयता को सहभाजित करनाः** नेटवर्क में विश्वास और गोपनीयता सभी सहभागियों के बीच सुचारु संप्रेषण और संबंध को बढ़ावा देती है। यद्यपि सूचना का सहभाजन सहभागियों के बीच नेटवर्क के सदस्यों के लिए खुली है परंतु रेखांकित नियम बने हुए हैं कि सूचना सहभाजन का किसी भी तरीके से दुरुपयोग नहीं करना चाहिए और नेटवर्क की सीमाओं के भीतर सुनिश्चित रूप से सुरक्षित रखनी चाहिए।

बोध प्रश्न I

टिप्पणीः अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) नेटवर्क तथा नेटवर्किंग को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रभावी नेटवर्किंग के आवश्यक तत्त्व क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 नेटवर्क के विभिन्न प्रकार

नेटवर्क का क्षेत्र परिवार की तरह लघु से लेकर राष्ट्रीय न्यायालयों और संबंधों की तरह विशाल व्यवस्था तक है। पारस्परिक सहायता और समर्थन को बढ़ावा देने के लिए निम्न प्रकार के नेटवर्क तैयार किए गए हैं।

1) **अनौपचारिक नेटवर्क:** अनौपचारिक नेटवर्क में परिवार, पड़ोसी और मित्र जैसे व्यैक्तिक संबंध सम्मिलित होते हैं, जिस पर कोई सहायता के लिए भरोसा कर सकता है। ये नैसर्गिक नेटवर्क के रूप में भी जाने जाते हैं। यह समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा योजना और हस्तक्षेप के लिए अपनाया जाने वाला प्रथम नेटवर्क है। इस बात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि

नकारात्मक या दुष–क्रियात्मक संबंध नेटवर्क के प्रभाव को कम कर सकते हैं। अनौपचारिक समूह मुख्य सहायक समूह भी होते हैं जिसे समाज कार्यकर्त्ता द्वारा किसी समस्या को सुलझाने तथा सामाजिक सहायता का निर्माण करने के लिए अपनाने की आवश्यकता होती है।

2) **औपचारिक नेटवर्क** : यह अपने सदस्यों के बीच नेटवर्किंग को बढ़ावा देने के लिए तैयार किए गए व्यवसायिक समूह को संदर्भित करता है, उन्हें योजनाबद्ध और संरक्षित सहायक समूहों के रूप में भी निर्दिष्ट किया जा सकता है जैसे एक स्वयं सहायता समूह औपचारिक नेटवर्क का उदाहरण है। इस प्रकार के नेटवर्क के सदस्यों का समान लक्ष्य और उसे प्राप्त करने की रुचि समान होती है। यह नेटवर्क प्रमुख व्यक्तिगत संबंधों के समूह से बाहर सहायक समूह होता है जो परिवार और मित्रों से बाहर होते हैं।

3) **आंतरिक/स्वदेशी नेटवर्क** : यह नेटवर्क कार्य स्थल से संबंधित होता है। व्यवसायिक संबंध और संघ समाज कार्यकर्त्ता के स्वदेशी नेटवर्क से कार्य स्थल में विकसित होते हैं। समान संस्था के विभिन्न विभागों में नेटवर्किंग इस आंतरिक नेटवर्क के उदाहरण हैं, एक गैर सरकारी संगठन में कार्यालय में प्रशासन एक इकाई का निर्माण करती है जबकि समुदाय में कार्य क्षेत्र कर्मचारी एक दूसरी अन्य इकाई का निर्माण करते हैं। कार्य की रूपरेखा में अंतर होने के बावजूद, संगठन में ये दोनों भिन्न इकाईयों के लोगों के कल्याण के लिए काम कर रहे संगठन के कार्यों के सुचारु संचालन के लिए एक दूसरे के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

4) **बाहरी/विदेशी नेटवर्क** : व्यवसायिक संबंध और सहयोग व्यवसाय से संबंधित होते हैं परंतु कार्य स्थल के बाहर बाहरी नेटवर्क का निर्माण करते हैं। जैसे– दूसरे संगठन के साथ संगठन में समाज कार्यकर्त्ता के संबंध दूसरे संगठन के साथ उसके बाहरी नेटवर्क का हिस्सा है। यौन

कार्यकर्त्ताओं के अधिकारों के लिए काम कर रहे पुलिस अधिकारियों के साथ बचाव कार्य को पूरा करने के लिए संघ का निर्माण करते हैं और यौन कार्यकर्त्ताओं को स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं प्रदान करने के लिए अस्पतालों के साथ संघ का निर्माण करते हैं। बाहरी नेटवर्क महत्त्वपूर्ण है क्योंकि कोई भी संगठन या व्यक्ति आत्म–निर्भर नहीं होता और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाओं से कल्याण सेवाओं का लाभ उठाने के लिए दूसरों से सहायता और संसाधन संगठित करने की आवश्यकता होती है।

5) **परिचालन/क्रियाशील नेटवर्क :** लोगों का नेटवर्क, जो कार्य के फलस्वरुप एक दूसरे को सहयोग देते हैं, परिचालन नेटवर्क का रूप धारण करते हैं। उदाहरण के लिए, सरकारी कल्याण विभाग में कुशल अधिकारी प्रत्यक्ष आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता या (ए.एस.एच.ए.) आशा कार्यकर्त्ता (अधिकृत सामाजिक स्वास्थ्य सक्रियतावादी) की तरह उनके अधीन निचले स्तर के कर्मचारियों के साथ सहयोग से कार्य करते हैं। कुशल अधिकारी लोगों को कल्याण सेवाओं के प्रावधान के लिए जूनियर कर्मचारियों के कार्यों का निरीक्षण और जांच करते हैं। कल्याण अधिकारी कर्मचारियों द्वारा किए गए कल्याणकारी कार्य को प्राप्त करता है और इस प्रकार वे कल्याण अधिकारी के क्रियाशील नेटवर्क का अनिवार्य भाग बनते हैं।

6) **व्यक्तिगत नेटवर्क :** इसे अनौपचारिक नेटवर्क के साथ न जोड़े क्योंकि यह परिवार के बाहर गठबंधन से पहचाना जाता है। इसमें ऐसे समूह सम्मिलित हैं, जैसे व्यवसायिक संस्थाएं, समान विचारों वाले पूर्व छात्र और समानता के समूह। वास्तव में ये उन लोगों का महत्त्वपूर्ण नेटवर्क है जो समाज कार्यकर्त्ता की या संगठनों की पहुंच को बढ़ाता है और स्थानीय से लेकर सार्वभौमिक तक संसाधनों को प्राप्त करता है।

7) **रणनीतिक नेटवर्क :** यह एक महत्त्वपूर्ण नेटवर्क है और इसमें एक व्यवसायिक क्षेत्र में, साथियों और वरिष्ठ लोगों के साथ गठबंधन बनाए रखना सम्मिलित है। यह नेटवर्क व्यवसायिक विकास के लिए सर्वोत्तम तरीकों के बारे में विचारों को सांझा करके, नए दृष्टिकोणों को सीखने और व्यवसायिक मोर्चे पर नए विकास के साथ अपने आप को अद्यतन रखने के द्वारा, व्यवसायिक विकास के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, समाज कार्यकर्त्ता कार्य के अतिरिक्त स्वयं को राष्ट्रीय समुदाय और संस्थाओं जैसे यू.एस.ए. में समाज कार्यकर्त्ताओं की राष्ट्रीय संस्था के साथ पंजीकृत करते हैं। भारत में, समाज कार्य अभी भी प्रमाणित व्यवसाय नहीं है। परंतु कुछ व्यवसायिक समुदाय जैसे भारत के व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं की राष्ट्रीय संस्था (एन.ए.पी.एस.डब्ल्यू.आई.) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थल खोजने का प्रयत्न कर रहे हैं । इस प्रकार के समुदाय समाज कार्य व्यवसायिकों के लिए संसाधनों विचारों को साझा करने के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण रणनीतिक नेटवर्क बनाते हैं और क्षेत्र के समकालीन विकास से संयुक्त रहकर स्वयं की सहायता करते हैं।

8) **सामाजिक नेटवर्क :** सोशल मीडिया एक ऐसा शब्द है, जिसका प्रयोग ऑनलाइन टेकनीक के लिए किया जाता है जो लोगों को स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय श्रोतागण के साथ संपर्क बनाने और शीघ्र सूचना तथा संसाधनों को बांटने के योग्य बनाते हैं। समकालीन समय में, सामाजिक नेटवर्किंग महत्त्वपूर्ण साधन भी बन गई हैं इससे ट्वीटर, फेसबुक आदि स्थानों के साथ नेटवर्क को बनाए रखने और विकसित करने के लिए सामाजिक नेटवर्क का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मीडिया के शीघ्र/तत्काल प्रगति दूरसंचार और कंप्यूटर तकनीक ने विविध सभ्य समाज के पक्षधारियों के बीच सूचना को सुविस्तृत बांटने में सरल बनाया है। यह नेटवर्क दो मुख्य कारणों से महत्त्वपूर्ण है– कम कीमत और श्रोताओं के साथ शीघ्र बांटना। यह समाज कार्यकर्त्ताओं और सभ्य सामाजिक संस्थाओं के लिए

समाज कार्यों और मुद्दों पर प्रतिस्पर्धाएं, संगठन या आंदोलनों का प्रबंध करने के लिए बहुत ही लाभदायक हो सकते हैं। सामाजिक मीडिया ने अभूतपूर्व रूप से जानकारी पहुँचाने को संभव बना दियाहै।

9) **नागरिक कार्य :** इसका संबंध स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर सभ्य समाज, संगठनों और सरकारों के बीच परस्पर क्रिया से है। यह रचनात्मक संबंधों को बनाने और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए महत्त्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, पास किया गया अधिनियम जैसे घरेलू हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा अधिनियम, 2005 बहुत सी महिलाओं की संस्थाओं का कार्य का एक उदाहरण है जो महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा की आवश्यकता के लिए सरकारी संगठन पर जोर देकर स्वीकार कराती है और सरकारी मशीनरी से बातचीत करके उन्हें महिलाओं के लिए कार्य करने के लिए वचनबद्ध करती है और हिंसा के विरुद्ध सुरक्षा के लिए भी कार्य करती है।

नेटवर्क के ये सभी प्रकार पड़ोस, समुदाय, व्यवसायिक समूहों या समाज के सभी सदस्यों के बीच संबंधों का प्रतिनिधित्व और आदान–प्रदान करते हैं। ये सभी सामाजिक पूंजी के संघ के भाग का रूप है। सामाजिक पूंजी मानवीय पूंजी के उद्देश्य से संबंधित है और व्यक्तिगत संबंधो की योग्यता, सामाजिक सहायता, साधन सम्पन्नता, कौशलताओं के ज्ञान की व्याख्या और समुदाय से संबधित है।

2.6 नेटवर्किंग के साधन और कार्यनीतियाँ

नेटवर्किंग अनिवार्य रूप से रचनात्मक नेटवर्क की कौशलताओं पर निर्भर करती है, जो यह ज्ञान प्रदान करती हे कि नए नेटवर्कों का निर्माण कैसे करना है। समान रूप से यह भी महत्त्वपूर्ण है कि व्यवसाय के लक्ष्यों की मांगों और आवश्यकताओं के अनुसार उपस्थिति नेटवर्कों में परिवर्तन करने की या बनाए रखने की आवश्यकता है। नेटवर्कों को संगठित करने के लिए सभ्य सामाजिक संगठनों और

समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए निम्नलिखित साधन बहुत लाभदायक है और समाज कार्य प्रक्रिया के लिए आवश्यक संसाधनों के लिए उनकी पहुंच में वृद्धि करते हैं।

1) **सामाजिक मीडिया (माध्यम)** : सोशल मीडिया/माध्यम लोगों को सार्वजनिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय श्रोताओं के साथ तीव्र सूचना और संसाधनों को बांटने और संपर्क रखने के योग्य बनाता है। यह कम कीमत पर अधिक से अधिक श्रोता प्रदान करता है और यह संप्रेषण के अन्य प्रकारों की तुलना में विस्तारपूर्वक फैला हुआ है। सामाजिक मीडिया का प्रयोग करने वालों के लिए सबसे अधिक साधारणतः प्रयोग किए जाने वाले प्लेटफार्म फेसबुक, ट्विटर और गूगल हैं।

2) **व्यवसायिक सदस्यता** : व्यवसायिक वृद्धि और श्रोताओं में वृद्धि दोनों के लिए विभिन्न संगठनों के साथ सामाजिक न्याय मामलों पर कार्य करने के लिए व्यवसायिक सदस्यता बहुत ही महत्त्वपूर्ण कदम है। भारत में, हमारे पास समाज कार्य व्यवसायिक समुदाय जैसे भारत में व्यवसायिक समाज कार्यकर्त्ताओं की राष्ट्रीय संस्था (एन.ए.पी.एस.डब्ल्यू.आई.) है, जो भारत में समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए नेटवर्किंग के सुअवसर प्रस्तुत करती है।

3) **भूतपूर्व छात्र समूह** : विस्तृत संस्थाएं जैसे भूतपूर्व छात्र संस्थाएं, समाज कार्यकर्त्ताओं के लिए नेटवर्किंग के प्रचुर सुअवसर प्रस्तुत करती है। इससे संबंधित समूहों की बैठकों में उपस्थित होना सामाजिक लक्ष्यों की सहायता के लिए लाभदायक और लंबे समय तक चलने वाले नेटवर्क के निर्माण में बहुत सहायक होते हैं।

4) **परिसंवाद/सम्मेलन/कार्य–शिविर/बैठक** : व्यवसायिक स्पर्धाएं जैसे परिसंवाद, सम्मेलन और बैठकें, व्यवसाय में सुदृढ़ संबंधों की स्थापना करने के लिए प्रभावशाली रास्ते हैं। यह नेटवर्किंग प्रक्रिया में वृद्धि करते हैं और विचारों, योजनाओं के आदान–प्रदान के लिए क्षेत्र प्रदान करते हैं।

5) **जनसभा आधारित साधारण मामला :** जनसभा आधारित मामले और समूहों के साथ किसी का सम्मिलित होना, नेटवर्किंग की प्रक्रिया में नवीनतम जानकारी को बनाए रखने के लिए महत्त्वपूर्ण नीति है। ये संबंध मामले का समर्थन करने के लिए ही केवल महत्त्वपूर्ण नहीं है वास्तव में इस तरह की भागीदारी हस्तक्षेपों में परिवर्तन के लिए बड़े स्तर की नीति में भाग लेने के लिए सुअवसर प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, कच्छ नव निर्माण अभियान स्थानीय स्तर पर स्थानीय गैर सरकारी संगठनों का एक सामूहिक समूह है। यह 1998 में कच्छ में विनाशकारी तूफान की प्रतिक्रिया के रूप में स्थापित किया गया था। नेटवर्क बनाने और समर्थन करने के लिए आवश्यक रणनीतियों का एक उदाहरण मैक्यूर (1991) द्वारा दिया गया है, जो ऐसी गतिविधियों का सुझाव देता है कि समाज कार्यकर्त्ता स्वयं सहायता समूहों से नेटवर्क बनाने के लिए उपयोग कर सकता है। ये इस प्रकार हैं:

1) मिलने के लिए स्थान प्रदान करना।

2) कोष के लिए प्रबंध करना और योगदान देना।

3) सदस्यों को जानकारी प्रदान करना।

4) नेताओं के रूप में सदस्यों को प्रशिक्षण देना।

5) लोगों को समूह से जोड़ना।

6) सामूहिक गतिविधियों का प्रचार करना।

7) समूह से परामर्श स्वीकार करना।

8) बड़े समुदाय में विश्वसनीयता प्रदान करना।

9) व्यवसायिक समुदाय में विश्वसनीयता प्रदान करना।

10) समूह और अन्य संगठनों के बीच प्रतिरोधक की तरह कार्य करना।

11) समूह नेताओं के लिए सामाजिक और भावनात्मक समर्थन प्रदान करना।

12) समूह नेताओं के साथ परामर्श करना।

समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा स्वयं सहायता समूहों के लिए नेटवर्किंग की योजना करने के लिए यह सूची उचित है। इनमें से कुछ गतिविधियां दूसरे प्रकार की नेटवर्किंग के लिए भी लाभदायक हो सकती है। उदाहरण के लिए, सभी नेटवर्क के लिए एक स्थान या यंत्रकला की मांग होती है जिनकी व्यक्तिगत बैठकों, अभियानों रैलियो आदि में आवश्यकता होती है परंतु वास्तविक नेटवर्कों के लिए इसकी आवश्यकता नहीं हो सकती।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः अ) उत्तर हेतु नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इस इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) अनौपचारिक तथा औपचारिक नेटवर्क को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) नेटवर्किंग की कार्यनीतियों को सूचीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.7 सारांश

नेटवर्किंग समाज कार्य के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण समकालीन प्रणाली के रूप में विकसित हो रहा है। यह जानकारी संसाधनों, समान अभिरुचियों और सुअवसरों को सामाजिक न्याय और मानव अधिकारों के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बांटने के लिए महत्त्वपूर्ण है जो कि सभी समाज कार्य प्रयासों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत है। समाज कार्यकर्त्ता बहुत से विभिन्न कोणों और विभिन्न स्तरों–सार्वजनिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय के साथ नेटवर्किंग में सम्मिलित हो सकते हैं। नेटवर्किंग यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि वंचितों को आवश्यक सहायता प्राप्त

हो सके। नेटवर्किंग के माध्यम से समाज कार्यकर्त्ता की भूमिका का प्रयोग वैश्विक मुद्दों से लेकर सार्वजनिक मुद्दों को हल करने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त, समुदाय में वृहत्तर समस्याओं को सुलझाने में भी नेटवर्क उपयोगी है।

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. कुल्शेड, वी एण्ड ओरमी, जे (2006). सोशल वर्क प्रैक्टिसः एन इंट्रोडक्शन. बेसिनगस्टॉकः पेलग्रेव मेकेमिलन।
2. फॉलगराइट. एफ. (2004) रिलेशनल सोशल वर्कः टुर्वाड नेटवर्किंग एण्ड सोसाइटल प्रैक्टिसिज. लंदनः जेसिका किंग्सले पब्लिशर्स लिमिटेड।
3. गिलक्रिस्ट, ए (2004) द वैल क्लेकटिड कम्युनिटी ब्रिस्टलः पॉलिटी प्रैस।
4. क्रिस्ट–एशमैन. के.के. एंड हुल, जी.एच (2006) जर्नलिस्ट प्रैक्टिस विद ऑर्गेनाइजेशनस एंड कम्युनिटीस वेलमॉण्टः बुक्स/कोले।
5. मैग्युर, एल. (1991) सोशल सपोर्ट सिस्टम इन प्रैक्टिस सिल्वर स्प्रिंग्स. एम. डी. नेशनल एसोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर्स प्रैस।

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) गिलक्रिस्ट (2004) सुझाव देते हैं कि नेटवर्क में, अस्तित्व और संयोजन के स्थायित्व का निर्धारिण व्यक्तिगत रूचियों, परिस्थितियों, समान घटनाओं या कभी–कभी विशुद्ध समानता द्वारा होता है। सदस्यों के बीच सहभागिता इकरारनामे या बल प्रयोग के बजाय विनिमय और दृढ़ विश्वास पर निर्भर करती है... नेटवर्क का सबसे महत्त्वपूर्ण और लाभदायक पहलू इसके सम्बन्धों का प्रतिरूप है, जो प्रायः आधारभूत मूल्य, सांझी रूचि या केवल अतिव्यापी जीवन के भूगोल से प्रतिबिम्बित होती है।

2) नेटवर्किंग बहुत ही नियोजित एवं गहन है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि प्रभावी नेटवर्किंग के लिए नेटवर्किंग के निम्नलिखित आवश्यक तत्त्वों को उपयोग में लाया जाए।

- **आंकड़ों को आधार बनानाः** सभी सहयोगियों के लिए संसाधनों और सूचना के आंकों को आधार बनाने की रचना अनिवार्य है और नेटवर्क में यह महत्त्वपूर्ण है। इसके बिना सूचना देने और सम्प्रेषण में दूरी आ जाएगी जो अप्रभावी नेतृत्व का कारण बनेगी।
- **कायम रहने वाले सम्बन्धों का निर्माणः** यह महत्त्वपूर्ण है कि नेटवर्किंग सम्बन्ध, समान अभिरूचियों और आपसी लक्ष्यों द्वारा सहजीवी और पथ–प्रदर्शित होते हैं क्योंकि केवल इन्हीं आधारों पर संप्रेषणीय नेटवर्क को सुरक्षित रखा जा सकता है।
- **संप्रेषणः** सूचना सहभाजन अप्रभावी नेटवर्किंग की कुंजी है। यदि नेटवर्किंग में सहभागी निरंतर समान रूचि को सूची को बांटने का कार्य नहीं करता, तो वह नेटवर्किंग सहभागियों के बीच अविश्वास का कारण बनेगा।
- **गोपनीयता को सहभाजित करनाः** नेटवर्क में विश्वास और गोपनीयता सभी सहभागियों के बीच सुचारू संप्रेषण और सम्बन्ध को बढ़ावा देती है।

बोध प्रश्न II

1) अनौपचारिक तथा औपचारिक नेटवर्क

- **अनौपचारिक नेटवर्क :** अनौपचारिक नेटवर्क में परिवार, पड़ोसी और मित्र जैसे व्यक्तिगत सम्बन्ध सम्मिलित होते हैं, जिस पर कोई सहायता के लिए भरोसा कर सकता है। ये नैसर्गिक नेटवर्क के रूप में भी जाने जाते हैं। यह समाज कार्यकत्ताओं के लिए योजना और अन्तःक्षेप के लिए अपनाया जाने वाला प्रथम नेटवर्क है।

- **औपचारिक नेटवर्क :** यह अपने सदस्यों के बीच नेटवर्किंग को बढ़ावा देने के लिए तैयार किए गए व्यवसायिक समूह को संदर्भित करता है। उन्हें योजनाबद्ध और संरक्षित सहायक समूहों के रूप में भी निर्दिष्ट किया जा सकता है।

2) मैक्यूर (1991) द्वारा नेटवर्क बनाने और समर्थन करने के लिए आवश्यक कार्यनीतियों का एक उदाहरण दिया गया है, जो ऐसी गतिविधियों का सुझाव देता है, जो समाज कार्यकर्त्ता स्वयं सहायता समूहों से नेटवर्क बनाने के लिए उपयोग कर सकता है। ये इस प्रकार हैं:

- मिलने के लिए स्थान प्रदान करना।
- कोष के लिए प्रबंध करना और योगदान देना।
- सदस्यों के रूप में सदस्यों को प्रशिक्षण देना।
- लोगों को समूह से जोड़ना
- सामूहिक गतिविधियों का प्रचार करना।
- समूह से परामर्श स्वीकार करना।
- बड़े समुदाय में विश्वसनीयता प्रदान करना।
- व्यवसायिक समुदाय में विश्वसनीयता प्रदान करना।
- समूह और अन्य सदस्यों के बीच प्रतिरोधक की तरह कार्य करना।
- समूह नेताओं के लिए सामाजिक और भावानात्मक समर्थन प्रदान करना।
- समूह नेताओं के साथ परामर्श करना।